संगम Impact Factor : 4.553 Website : www.ginajournal.com ISSN : 2321-8037 SANGAM
A Peer Reviewed International Refereed Journal विशेषांक–समकालीन हिन्दी साहित्य और विमर्श Vol. 11, Issue 4
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित मासिक

Page No.: 686-692

समकालीन साहित्य में नारी विमर्श

नीरजा द्विवेदी
पूर्व छात्रा (एम0एड0),
आर्यावर्त इंस्टिटयूट ऑफ हाईयर एजूकेशन
उतरेठिया, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

सारांश – भारत में यह श्लोक प्रसिद्ध है–

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ ईश्वर का वास होता है, परन्तु सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक दृष्टि से विश्लेषण करने पर स्थिति ठीक उलट दिखायी देती है वैदिक काल में महाराज मनु स्त्री को पुरूष के द्वारा रक्षित बनाकर कहा है –

'' पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने पुत्रश्च स्थविरे भावे न स्त्री स्वतन्त्रामर्हति।''

अर्थात स्त्री बचपन में पिता, युवावस्था में पति तथा बुढ़ापे में पुत्र द्वारा रक्षति होती है। प्रस्तुत श्लोक में हम देख सकते हैं कि नारी का स्वतंत्र अस्तित्व कहीं भी स्पष्ट नजर नही आ रहा है। स्त्री समकालीन चिन्तन का एक मुख्य विषय है। हिन्दी साहित्य में करीब दो–तीन दशक से 'स्त्री विमर्श' पर चर्चाएँ हो रही हैं। स्त्री विमर्श पर न केवल पुरूष विचारकों ने बल्कि स्त्री विचारकों ने भी अपना सक्रिय योगदान दिया है। किसी भी देश और समाज में स्त्री प्रायः दूसरे दर्जे की नागरिक मानी जाती है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि स्त्री सदियों से भेदभाव एवं शोषण सहते रहते निशक्त हो गई है। आज जब कभी भी साहित्यिक चर्चा होती है तो विमर्श शब्द स्वतः बहस के केन्द्र में आ जाता है शब्द प्रयोग की दृष्टि से विमर्श शब्द अत्यन्त प्राचीन है परन्तु आज यह शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त हो रहा हैं, यह स्त्री शब्द के साथ होने पर एक विशिष्ट प्रकार की अर्थवत्ता देने लगता है। ' स्त्री विमर्श' ऐसा लेखन है जिसने स्त्री के बारे में गहराई से सोचने समझने के लिए ध्यान आकृष्ट किया है। 'स्त्री विमर्श' के जरिये स्त्री के शोषण, दमन, उत्पीड़न की बातें सामने आ रही है। स्त्री किस प्रकार से अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बना सकती है, पितृसत्ता का विरोध कर शोषण से छुटकारा पा सकती है। इस हेतु 'स्त्री विमर्श' ही ऐसा लेखन है जिसके द्वारा स्त्री – विमर्शकार स्त्री के उत्पीड़न के साथ साथ उन सवालों को भी उठा रहे है जिनमें स्त्रियों की उपेक्षा हुई है। पुरूष प्रधान समाज ने उसका

सिर्फ एक वस्तु के रूप में उपयोग किया। पुरूष के अत्याचार के विरूद्ध नारी मुक्ति के लिए भी आन्दोलन हुए। 'नारीवाद' भी एक ऐसा ही स्त्री–मुक्ति आन्दोलन है। 'नारीवाद' से जुड़ा स्त्री विमर्श साहित्य सम्बन्ध विमर्श माना जाता है। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के इन प्रमुख हस्ताक्षरों की स्त्री चिन्तन सम्बन्धी अवधारणएँ क्याा हैं, प्रस्तुत शोध आलेख में प्रमुख रूप से इसी पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा एवं विचार साहित्य को स्त्री विमर्श की अवधारणाओं को पहचानने का आधार बनाया जा रहा है।

महत्वपूर्ण शब्द – समकालीन , नारी, विमर्श, साहित्य।

प्रस्तावना–

स्त्री विमर्श : अवधारणा एवं स्वरूप– 'स्त्री' शब्द के पर्याय के अर्थ में प्रायः 'नारी' शब्द का प्रयोग होता रहा है। स्त्री (Female) को समझने के क्रम में हमेशा पुरूष (Male) का नाम साथ में जुड़ा हुआ रहता है। जैसे स्त्री–पुरूष, नर–नारी, मेल – फीमेल आदि। ऐसे युग्म शब्दावलियों के पीछे कई कारण हैं, तथा इस पर कई आरोप भी लगाये जा रहे हैं। ' स्त्री' को सरल अर्थ में समझातें हुए **सिमोन द बोउआर** का यह कथन बेहद समीचीन प्रतीत होता है–

"'Women'? Very simple, say those who like simple answers : She is a womb, and ovary; She is a female : this word is enough to define her."

धीरे धीरे स्त्री शब्द अपनी विस्तृत अर्थवत्ता में छिप गया। शाब्दिक व्युत्पत्ति के अनुसार 'स्त्री' परिवार का सूत्रधार तथा मौलिक अर्थ में जन्मदात्री के रूप में सर्वमान्य है। स्त्री शब्द प्रकृति स्वरूपा भी स्वीकार किया गया है, इस अर्थ में उसमें शब्द, स्पर्श, गंध तथा रस आदि का अद्भुत एकीकरण है।

विमर्श एक समष्टिगत बौद्धिक विचार है। समानार्थक रूप में 'विमर्श' के लिए अंग्रेजी में डिस्कोर्स शब्द का प्रयोग किया जाता है। सोचने – विचारने के क्रम में बौद्धिक चिन्तन मनन द्वारा किसी भी सूक्ष्म तथा वृहत्तर परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित विषय की गुणवत्ता पर तथ्य एवं तर्क आधारित दृष्टि की आलोचना व समीक्षा करना ही विमर्श है। सोच विचार, चिंतन–मनन, विचार – विनिमय, परामर्श, मशविरा, परीक्षण – निरीक्षण, चर्चा – परिचर्चा, समीक्षा आदि शब्दों का समाहार रूप 'विमर्श' शब्द में निहित है। भोलानाथ तिवारी के विनिमय विमर्श शब्द से आशय तबादला – ए– ख्याल, परमर्श, मशविरा, विचार, विनिमय, सोच – विचार आदि से है।

भारतीय सन्दर्भ में स्त्री विमर्श – भारतीय वाड्मय चेतना में नारी आरम्भिक काल से ही देवी शक्ति, माता आदि के रूप में सम्मानीय रही है। यद्यपि भारतीय संस्कति में स्त्री को हमेशा से उच्च स्थान का दर्जा प्राप्त दिखाया जाता रहा है लेकिन इसकी आड़ में वह पुरूषवादी मानसिकता एवं उसके दंश की शिकार रही है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसकी परधीनता की जकड़न एवं दीवारीं

और मजबूत होती गई। आरम्भ से ही वह पुत्री , बहन, पत्नी एवं माँ की चारदीवारी तक सिमटकर रही गई। वेदों में लिख गया है –

'' कार्येषु मंत्री करणेषु दासी, भोज्येषु माता शयनेषु रंभा। धर्मानुकूला क्षमया धारित्री, भार्या च षाड्गुण्यवतीह दुर्लभा।।''

अर्थात् कार्य प्रसंग में मन्त्री, गृहकर्म में दासी भोजन कराते समय माता, रति प्रसंग में रंभा, धर्म में सानुकूल और क्षमा करने में धारित्री; इन छह गुणों से युक्त पत्नी मिलना दुर्लभ है अर्थात अलग अलग कार्यो के लिए स्त्ररी की भिन्न – भिन्न छवि बनती चली गई।

भारतीय नवजागरण के समय में स्त्रियों के प्रति समाज का नजरिया धीरे धीरे बदलता गया। ज्योतिबा फुले , सावित्री बाई फूले, शारदा देवी, महात्मा गाँधी आदि के विचारों में स्त्री का बौद्धिक और सामाजिक स्थान निश्चय ही उच्च्य रहा।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में बीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध स्त्री विमर्श के संदर्भ में खास महत्व रखता है। हिन्दी साहित्य में मीरा, महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान आदि रचनाकारों ने इसे सार्थक दिशा देने का भरपूर प्रयास किया।

पश्चात्य संदर्भ में स्त्री विमर्श – लगभग 70 के दशक में पाश्चात्य के देशों में नारी की स्थिति अच्छी नही थी। स्पार्टा सीरिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा आदि देशों में एक स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्थिति संकट में थी। स्त्रियां अपने नाम से कोई सम्पत्ति नहीं रख सकती थी। मानसिकता में या यूं कहें तो शारीरिक और बौद्धिक चिन्तनों में स्त्री हीनतर समझी जाती रही। जापान और चीन जैसे देशों में तो उस समय स्त्रियों को मंदिर जाना निषेध था।

अमेरिका में सन् 1968–69 को हो रही मिस अमेरिका प्रतियोगिता को खुले स्तर पर 'Cattel Parade' (पशु परेड) कहकर आलोचना की गई। हम देखते है कि नारीवाद के प्रथम स्तर पर महिलाओं को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ। जॉन स्टुअर्ट मिल के शब्दों में–

'' Men as well as woman do not need political right in order that they may govern but in order that may not be misgoverned.''

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1918 (Representation of the people act-1918) इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल थी। नारीवादी रचनाकारों में से जॉन स्टुअर्ट मिल (1806), लुसी स्टोन, Estelle Sylvia Pankhurst (1882) Nellie Mc clung आदि ने स्त्री अधिकार सम्बन्धी मुद्दों को अपने लेखन के जरिए मुखरता से उठाया। हम देखते है कि धीरे धीरे पाश्चात्य की स्त्रियां चेतना सम्पन्न होती गई। आज वे अपने अधिकार आत्मसम्मान के आन्दोलन में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप में हिस्सा लेती है।

हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श– स्त्री विमर्श हिन्दी साहित्य का एक ज्वलन्त प्रश्न है जो देश की आधी जनसंख्या से सम्बन्धित है। स्त्रियों की वेदना ही स्त्री विमर्श की जन्मदात्री है। यदि भारतीय

इतिहास पर दृष्टिपात किया जाए तो वैदिक काल से लकर आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिककाल में हिन्दी साहित्य समाहित हो जाता है। **आचार्य शंकराचार्य** ने तो स्त्री को नरक का द्वार ही कह डाला–

''द्वारस्ति नरकस्य नारी''

ऐसे समय में कृष्ण भक्त मीराबाई का पितृसत्तात्मक समाज के विरूद्ध जाकर अपनी निजता के अनुरूप जीवन यापन करना बहुत आश्चर्य की बात थी। रीतिकाल में कवियों ने नारी के उद्गार वासनात्मक तो प्रकट किए है।

मध्ययुग में तो स़्त्री पति के हाथों की कठपुतली बनकर रह गयी थी। स्त्रियों को रीतिकाल में आदर नही मिला था। स्त्रियॉ सती प्रथा, बाल विवाह, बहुपत्नी प्रथा, पर्दा प्रथा, अशिक्षा, कन्या वध जैसी कठिनाईयों से जूझती रहीं, लेकिन सामाजिक स्तर पर स्त्री के सुधार के प्रयास इस काल से ही होने लगे। 19 वीं शताब्दी में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को ऊपर उठाने के लिए राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर आदि ने भरसक प्रयास कियें।

आधुनिक काल की बात करें तो स्त्री शिक्षित हैं। कामकाजी अधिकारों के प्रति सजग तथा आर्थिक रूप से स्वतंत्र है, परन्तु कहीं न कहीं वह मानसिक घुटन को अपने अंदर महसूस करती हैं। पुरूष प्रधान समाज ने कभी सोचा भी नहीं था कि उसका अनुगमन करने वाली स्त्री एक दिन लॉ क्लासेज चलाएगी, नारीवादी नारे लगाएगीं तथा अन्तरिक्ष में जाएगीं।

नारी विमर्श को आधुनिक काल में कविता, उपन्यास एवं कहानी में व्यापक तौर पर देखा जा सकता है। डॉ0 गोपाल शरा्ा सिंह की 'मानवी', रामनरेश त्रिपाठी के 'मिलन' आदि काव्यों में इसका संकेत मिलता है। कुमारी 'मधू' के एक गीत की इन पंक्तियों मे इस नवीन विचारधारा का समर्थन नारी की ओर से मिलता हैः

'' एक तुम्हारी ही परिचय की सीमा में बँधकर रहूँ
इतनी लघुता का वरदान न आज मुझे स्वीकार है।
मेरे पैरों में जंजीर न बाधों तुम अपने अधिकार,
विहंगी की उन्मुक्त गगन में उड़ने की अभिलाषा है।''

महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'श्रृखंला की कड़ियाँ', मृणाल पाण्डे की पुस्तकें , क्षमा शर्मा की पुस्तक ' स्त्री का समय' आदि स्त्रीवादी रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं में कई महत्वपूर्ण मुद्दों का उठाया।

'देवरानी जेठानी की कहानी', 'वमा शिक्षक' आदि उपन्याओं में स्त्री चेतना ही मूलाधार है। उषा प्रियवंदा का उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका', राजी सेठ का उपन्यास 'मै तो जन्मा ही', मंजुल भगत की ' अनारो' , मैत्रेयी पुष्पा की ' अल्मा कबूतरी' आदि रचनाकारों ने भी नारी सशक्तिकरण पर बल दिया।

एक स्तर पर यह विमर्श हिन्दी उपन्यासों में चित्रित स्त्री के जीवन पर केन्द्रित है, जो स्त्री की दशा में सुधार, स्त्री सबलीकरण, स्त्री मुक्ति तथा स्त्रीवाद के रूप में है, वहीं दूसरी ओर महिला लेखन के सन्दर्भ में स्त्री अनुभव, स्त्री चेतना और स्त्री स्वतंत्रता की मांग के रूप में सामने आता है ऐसे अनेक रूप पुरूष एवं महिला कहानीकार हैं, जिनमें राजी सेठ, प्रभा खेतान आदि हैं। राजी सेठ की 'यह कहानी नही', उज्जवल भट्टाचार्य की कहानी 'परिवार', श्योराज सिंह बैचैन की कहानी 'शोध प्रबंध' , रामधारी सिंह दिनकर की 'चोर दरवाजा' कहानी , सुधा अरोड़ा की कहानी ' रहोगी तुम वही' आदि रचनाओं ने भी पुरूष सत्तात्मक समाज को बदलने में अपनी भूमिका निभाई।

अध्ययन के उद्देश्यः –भारतीय चिंतन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श की भूमिका, उसके संघर्ष एवं उसकी अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को रेखाकिंत करते हुए वर्तमान सन्दर्भ में परिवार, समाज और राजनीति के क्षेत्र में आये बदलावों को हिन्दी साहित्य के माध्यम से दिखाया है। साथ ही शिक्षा और आत्मनिर्भरता के परिणाम स्वरूप स्त्री जीवन के विकास और सशक्तिकरण को भी हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की भूमिका शोध पत्र में प्रस्तुत किया है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक, विवरणात्मक , ऐतिहासिक पद्धतियों का प्रयोग हुआ है।

सामग्री संकलन– शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु विभिन्न पुस्तकालयों से शोध विषय से सम्बन्धित सहायक ग्रन्थों, पत्र– पत्रिकाओं, शोध– प्रबन्धों एवं इंटनेट पर उपलब्ध सामग्रियों आदि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष– छायावादी कवियों मे से जयशंकर प्रसाद जी ने स्त्री को 'श्रद्धा', सूर्यकान्ता त्रिपाठी निराला ने 'ज्योतिर्मयी', सुमित्रानन्दन पंत जी ने 'देवी', 'माँ','सहचरि','प्राण' इत्यादि कहकर सम्मनित किया। प्रयोगवादियों ने स्त्री को 'बोल्ड' तो कुछ ने 'बल्गर' तक की संज्ञा दे डाली। यदि हम स्त्री के गुण और त्याग पर ध्यान केन्द्रित करते है तो जयशंकर प्रसाद जी की यह पंक्तियाँ समीचीन प्रतीत होती है–

> ''**नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,**
> **विश्वास–रजत–नग पगतल में।**
> **पीयूष–स्त्रोत–सी बहा करो,**
> **जीवन के सुन्दर समतल में।''**

समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों मे सूत्र रूप में यही बात प्रकट होती है कि नारी में जो गुण है, कौशल है, उन्हे भूलाकर मात्र उसके रूप और रंग को देखा जाता है। जिस दिन नारी के गुण को देखा जाएगा, उसी दिन उसें एक व्यक्ति का स्थान प्राप्त हो जाएगा। इसलिए स्त्री – विमर्श, स्त्रियों के लिए किया गया एक आंदोलन है स्त्री विमर्श पुरूषों के विरोध में संघर्ष न होकर जैविक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक , और राजनैतिक स्तरों पर जो कनिष्ठ स्थान दिया जाता है, उसे समाप्त कर पुरूषों के समान स्थान प्राप्त करके अपने अस्तित्व की अलग पहचान निर्मित कराता है। साहित्य में स्त्री विमर्श एक मानवीय दृष्टि है जो स्त्री पुरूष भेद को मिटाकर दोनो में भी समानता लाने की बात करता **है। डॉ0 प्रभा खेतान** के अनुसार–

''स्त्री न गुलाम रहना चाहती है न पुरूष को गुलाम बनाना चाहती है स्त्री चाहती मानवीय अधिकार।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. खान, साहीन एवं राहुल, डी.आर. (2018); हिन्दी साहित्य लेखन में स्त्री विमर्श की दशा एवं दिशा. International Journal of Scientific & Innovative Research studies, 6 (1), 113-117
2. डहेरिया, सविता (2014); समकालीन महिला उपन्यासकार स्त्री विमर्श का संदर्भ. International Journal of creative research thoughts, 2 (11), 1-3
3. पटेल, मंजू (2019); स्त्री विमर्शः एक चिन्तन.International Journal of research in social Sciences , 5 (9), 2-6
4. बाला, ज्योति (2017); हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श. शब्द ब्रम्ह भारतीय भाषाओं की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 9 (1), 1670 – 1676.
5. भारद्वाज, धीरेन्द्र एवं मीणा, अशोक कुमार (2018); हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की भूमिका. 3 (4), 66 – 68.
6. लाल, जीवन (2014); हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श. 2 (1), 32 – 35.
7. साहू, दिव्य रंजन (2020); अनामिका एवं अपर्णा महांति की कविताओं में स्त्री विमर्श : तुलनात्मक अध्ययन. दर्शनशास्त्र मे प्रकाशित एम.फिल. लघु शोध प्रबंध, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक।

Name – Neerja Dwivedi
College Add- Aryavart Institute of Higher Education,
Amar Shaheed Path, Opp- Ambedkar University,
Utarethia, Aurangabad Khalsa, Lucknow, UP - 226005
Mob No : 9453562850
Email Id – kumarashokdwivedi@gmail.com